कृषि पर्यटनःउघमिता का नया आयाम

कृषि कुंभ (जनवरी, 2023),
खण्ड 02 भाग 08, पृष्ठ संख्या 21–22

कृषि पर्यटनःउघमिता का नया आयाम

अपर्णा जायसवाल[1], सुरेन्द्र राय[2] एवं श्रद्धा कर्चो[3]

सहायक प्राध्यापक, विस्तार विभाग, कृषि महाविद्यालय, बालाघाट (जे.एन.के.वि.वि.,जबलपुर)[1,2]

सहायक प्राध्यापक, पादप रोग विज्ञान, विभाग, कृषि महाविद्यालय, बालाघाट (जे.एन.के.वि.वि., जबलपुर)[3], भारत।

Email Id: rituparnika@gmail.com

कृषि पर्यटन शब्द की उत्पत्ति 20वी सदी के अंत में हुई।यह पर्यटन का ऐसा नया आयाम है जिसमें कृषि संबंधित व्यवसाय को जन साधारण के मनोरंजन के उददेश्य से खोला जाता है जिससे पर्यटकों को कृषि संबंधित कार्यो का वास्वतिक अनुभव कराया जा सकें। आय की दृष्टि से, ग्रामीण एवं शहरी दोनो समुदायों के लिये यह अत्यंत महत्वपूर्ण है।

सामाजिक,आर्थिक एवं वातावरण के आधार पर देखें तो यह रोजगार, प्राकृतिक संसाधन संरक्षण विश्राम व शिक्षा में इसका विशेष स्थान है।ग्रामीण उद्यमिता की बात करें तो, कृषि पर्यटन ग्रामीण समुदायो के लिये ऐसा वरदान है जिसमें उनकी आय वृद्धि होने के कारण, जीवन स्तर में काफी सुधार किया जा सकता है। राजस्व वसूली के साथ, इसका सांस्कृतिक दृष्टिकोण भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। इसके माध्यम से पर्यटक ज्ञान वर्द्धन कर उद्यमिता के अवसरों का अनुठा लाभ भी प्राप्त कर सकते है।

कृषि पर्यटन व पर्यावरण पर्यटन – यह दोनों एक सिक्के के दो अलग–अलग पहलू है।प्राकृतिक स्थानों का यदि पूर्ण जिम्मेदारी से भ्रमण कराया जायें जिससे पर्यावरण संरक्षण तो हो ही और वहां के स्थानीय लोगों के जीवन स्तर में भी वृद्धि हो तो उसे पर्यावरण पर्यटन कहेंगे।

यह आमतौर पर यात्रा कंपनियों के द्वारा मार्गदर्शक के सान्निध्य में प्राकृतिक स्थलों व विरासतों को देखने की दृष्टि से करवाया जाता है। अतः यह कृषि पर्यटन से भिन्न है। कृषि पर्यटन का आधार कृषि व ग्रामीण परिवेश कृषि प्र्यटन में किसान स्वंय मार्गदर्शक का कार्य संपन्न करता है व अपने कृषि फॉर्म का पर्यटकों को भ्रमण करवाता है। जिससे न सिर्फ उनका मनोरंजन होता है अपितु कृषि प्रक्षेत्र की वास्तविक परिस्थितियों का अनुभव होने से ज्ञानवर्द्धन भी होता है। यह ग्रामीण स्थलों में बहु–गतिविधियों को सम्पन्न करवाकर पर्यटकों को कृषि के विभिन्न पहलुओं से जागरूक करवाता है। जैसे– स्थानीय उत्पाद निर्माण, परंम्परागत खाना, कृषि व्यवसाय, संस्कृति इत्यादि। जिससें सतत पर्यटन विकास में मदद मिलती है। जिससे पर्यटक प्रकृति के करीब आता है व जुडाव महसूस करता है। यह आम पर्यटन से बहुत सी बातों में भिन्न है :–

1. कृषि पर्यटन में किसी प्रकार का कोई प्रदुषण नहीं होता।
2. यह आर्थिक दृष्टि से भी सस्ता है।इसमें खाने, ठहरने, यात्रा, आराम पर बहुत कम खर्च होता है।
3. कृषि पर्यटन के द्वारा ग्रामीण हतकरघा, बोली, संस्कृति, परंपरा, पहनावे को बढावा मिलता है। जिससे उन्हें विलुप्त होने से बचाया जा सकता है।
4. इसमें पर्यटक ग्रामीण कृषि गतिविधियों को न सिर्फ देखते है, बल्कि उसमें भाग भी लेते है।

कृषि पर्यटन के बहुत से हिस्से है।

1. कृषि प्रक्षेत्र में दुकान ।
2. खेतों में ठहरना।
3. खेत दौरा व कक्षा।

4. कृषि प्रर्दशनी व त्यौहार।
5. युवा शिविर।
6. मछली पकडना।
7. कृषि उत्पाद निर्माण।
8. बागीचे में डिनर।

कृषि पर्यटन की शुरूवात किसान अथवा उनके समूहों के द्वारा की जा सकती है। जिनके पास पर्याप्त भूमि, फार्म हाउस, पानी व सबसे महत्वपूर्ण ऐसे कृषक जो पर्यटकों का मनोरंजन करने में इच्छुक हो वे इसे अपना सकते है। इसके अलावा कोई भी सरकारी व नीजि संस्थान जैसे– कृषि सहकारी समिती, गैर–सरकारी संस्थान, कृषि विश्वविद्यालय व कॉलेज, स्थानीय ग्राम निवासी व किसान की मदद एवं प्रयासों से इसे खोला जा सकता है।इसके लिये कुछ मुलभूत आवश्यकताऐ है–

1. कृषि पर्यटन के लिये एक बडा प्राकृतिक या छोटा समृद्ध सांस्कृतिक परिदृश्य हो।
2. परिवहन के साधन उपलब्ध हो जिससे पर्यटको के आवागमन में किसी प्रकार की कोई बाधा न हो।
3. आधारित सरंचना जैसे ठहरने व खान–पान की उचित व्यवस्था हो।
4. स्थित राजनीतिक अवस्था भी बहुत महत्वपूर्ण है।
5. शांति व अमन–जिससे पर्यटकों का आर्कषण बना रहे।

वर्तमान परिपेक्ष्य में कृषि पर्यटन धनार्जन करने का सुनहरा तरिका है। इसमें सफलता हासिल करने के लिये निम्मलिखित बातों को ध्यान रखने की आवश्यकता है:–

1. अखबार, टी.वी. व इंटरनेट के माध्यम से प्रचार।
2. स्कूल, कॉलेज, एन.जी.ओ., क्लबों इत्यादि से संबंध स्थापित करना।
3. स्वागत सत्कार में महारथ होना।
4. पर्यटकों की अवाश्यकताओं व उम्मीदों को समझ उसकी आपूर्ति करवाना।
5. समय–समय पर प्रतिक्रिया व सलाह लेना।
6. अलग–अलग तरह के पर्यटन–पकैज (मौसमीय) बनाना।
7. भविष्य नियोजन ।
8. समय के अनुरूप बदलाव।
9. प्राकृतिक आपदा से बचने के लिये बीमा करवाना।
10. हर उम्र के लोगों के लिये विशेष आर्कषण (जैसे–बच्चों के लिये नौकाविहार) इत्यादि।

कृषि पर्यटन के द्वारा ग्रामीण खेतीहर समुदाय की जीवन स्तर को बहतरीन बनाने की असीम संभावनाऐ है। सतत् ग्रामीण विकास जैसे उद्देश्य की प्राप्ति कृषि पर्यटन के द्वारा संभव की जा सकती है। इसलिये ऐसा प्रयास करें कि नये–नये पौधों की किस्मों व जानवरों की नस्लों को पहचान कर कृषि पर्यटन का हिस्सा बनाये। पारंपरिक व स्वदेशी, तकनीकी ज्ञान को एकत्रित करें। प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन पर विशेष ध्यान

दें। इन सभी बातों को अपना कर कृषि पर्यटन में ना सिर्फ पर्यावरण जागरूकता बढेगी, बल्कि पर्यावरण संरक्षण भी संभव होगा।